सामाजिक परिवर्तन के प्रौद्योगिकीय कारक

Miss. CHHAYA
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
J.K.P.(PG) COLLEGE MUZAFFARNAGAR

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना :-

प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त कारक है। प्रौद्योगिकी समाज को अनेक प्रकार से प्रभावित करती है, क्योंकि प्रौद्योगिकी मे कोई भी परिवर्तन किसी संस्था अथवा समूह मे परिवर्तन का कारण बनता है।

प्रौद्योगिकी का अर्थ एवं परिभाषाएँ :-

प्रौद्योगिकी जनित क्रान्ति ने सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया। सामाजिक क्रान्ति का बहुत अच्छा दृष्टान्त थर्स्टीन वेबलीन का विलास अर्थात् फुरसत का सिद्धान्त है।

ऑगबर्न का कथन है, " प्रौद्योगिकी समाज को हमारे पर्यावरण मे परिवर्तन द्वारा जिसके प्रति हमे अनुकूलित होना पड़ता है, बदलती है। यह परिवर्तन प्राय: भौतिक आयामों मे आता है तथा हम इन परिवर्तनों के साथ जो अनुकूलन करते है, उससे प्रथाओ एवं सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन हो जाता है।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उत्पादन - प्रौद्योगिकी मे परिवर्तन

प्रौद्योगिकी की उन्नति के सम्मुख हमारी मनोवृत्तियाँ, विश्वास, रीति-रिवाज शिथिल हो गये है। श्रमिको की चेतना, सामाजिक वर्गो की दैवी व्यवस्था, रीति-रिवाज तथा जन्म की प्रतिष्ठा सभी प्रौद्योगिकी के विकार हुए है। औद्योगिक युग मे स्त्रियों की प्रस्थिति का उदाहरण लिया जा सकता है। औद्योगिकवाद ने उत्पादन की घरेलू प्रणाली को नष्ट कर स्त्रियों को घर से कार्यशाला एवं कार्यालय मे पहुँचा कर उनकी आय को विभेदित कर दिया है।

संचार - प्रौद्योगिकी मे परिवर्तन

आधुनिक संचार - प्रविधियो मे परिवर्तनो का सामाजिक जीवन पर प्रभाव उत्पादन - प्रौद्योगिकी मे परिवर्तनो के प्रभाव के समान है परन्तु संचार - साधनों में परिवर्तनों का अतिरिक्त प्रभाव भी पड़ता है, क्योंकि जिस प्रयोग मे वे लाए जाते है, उनका स्वंय सामाजिक महत्व होता है। सभी संचार- विधियो का मूल कार्य समय एवं दूरी पर विजय प्राप्त करना है। संचार की प्रविधियो उन संगठनो, जिनका मनुष्य विकार कर सकता है के क्षेत्र को तथा पर्याप्त सीमा तक उनके स्वरूप को सीमित कर देती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

यातायात - प्रौद्योगिकी मे परिवर्तन

यातायात के साधनों मे परिवर्तन अथवा उन्नति दूरी पर भौतिक विजय है। यातायात के साधन एवं ढंग इस बात का निर्धारण करते है कि मनुष्य कितनी सुगमता से आ-जा सकते है तथा कितनी सुगमता से दूसरे स्थानों अथवा समाजों के लोगों से विचारो अथवा वस्तुओं के आदान-प्रदान हेतु सम्पर्क स्थापित कर सकते है।

पारिवारिक जीवन पर प्रभाव

आधुनिक प्रौद्योगिकी ने पारिवारिक सगंठन एवं सम्बन्धो को निम्न-लिखित प्रकार से प्रभावित किया है —

(i) प्रौद्योगिकी ने सयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन मे योगदान दिया है।

(ii) स्त्री और पुरुष दोनों के नौकरी करने से बच्चों के समाजीकरण पर कुप्रभाव पड़ा है।

(iii) प्रौद्योगिकी ने स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'स्त्री मुक्ति आन्दोलन' प्रौद्योगिकी का परिणाम है।

(iv) प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, विलम्ब से विवाह प्रौद्योगिकी के अन्य प्रभाव है।

(v) संतति - नियंत्रण के साधनों के आविष्कार ने परिवार के आकार को कम कर दिया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आर्थिक जीवन पर प्रभाव

इसके प्रभाव निम्न-लिखित है —

(i) उद्योग घरेलू नहीं रह गए है। अब कार्यशालाओं, एजेन्सियो, भंडारो, बैंक आदि जैसे आर्थिक संगठनो का विकास हुआ है।

(ii) इसने पूँजीवाद एंव इसकी सब बुराइयों को जन्म दिया है।

(iii) इसने जीवन-स्तर मे वृद्धि की है।

(iv) श्रम-विभाजन एंव विशेषीकरण प्रौद्योगिकी की उपज हैं।

(v) इसने आर्थिक मंदी, बेकारी, औद्योगिकी संघर्षों, दुर्घटनाओ एंव रोगो को जन्म दिया है।

(vi) इसने श्रमिकसंघ आन्दोलन को जन्म दिया है।

सामाजिक जीवन पर प्रभाव

इसके प्रभाव निम्नलिखित हैं —

(i) प्रौद्योगिकीय विकास से सामुदायिक जीवन का ह्रास हुआ है।

(ii) इससे व्यक्तिवादिता की भावना मे वृद्धि की है।

(iii) प्रौद्योगिकीय विकास ने नगरो में मकानो एंव गन्दी बस्तियो की समस्या को जन्म दिया है।

(iv) मनोरंजन का व्यापारीकरण हो गया है।

(v) प्रौद्योगिकीय विकास ने जन्म से लेकर मृत्यु तक सामाजिक स्तरीकरण के आधार को बदल दिया है।

(vi) जाति-व्यवस्था के बंधनों को शिथिल कर दिया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

राज्य पर प्रभाव

प्रौद्योगिकी राज्य को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित करती है -

(i) अनेक कार्य परिवार से राज्य को हस्तांतरित हो गए है समाज कल्याण की अवधारणा प्रौद्योगिकी की उपज है राज्य के कार्यक्षेत्र मे भी वृद्धि हुई है।

(ii) राज्य पर दबाव-समूहो का प्रभाव बढ़ गया है।

(iii) स्थानीय शासन के कार्य केन्द्रीय सरकार के पास आ गए है।

(iv) राष्ट्रवाद के अवरोधक चूर-चूर हो गए है तथा विश्व राज्य का विचार बल पकड़ रहा है।

(v) प्रजातन्त्र शासन का सामान्य रूप बन गया है।

धार्मिक जीवन पर प्रभाव

वैज्ञानिक ज्ञान की वृद्धि होने से अंधविश्वास समाप्त हो रहे है। अब धार्मिक सहनशीलता अधिक मात्रा मे पाई जाती है विभिन्न धर्मो के अनुयायियों ने अपनी रूढिवादिता को समाप्त करके दूसरे धर्मो के लोगो के साथ उठना-बैठना आरम्भ कर दिया है। धर्म अब अधिक वैज्ञानिक एवं लौकिकीकृत बन गया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सारांश-

प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त कारक है प्रौद्योगिकी समाज को अनेक प्रकार से प्रभावित करती है। प्रौद्योगिकी मे कोई भी परिवर्तन प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी संस्था अथवा समूह मे परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner